भारतीय संस्कृति के अवदान में बौद्ध धर्म की महत्ता : एक ऐतिहासिक अध्ययन

मंजू कुमारी

शोध-सार

प्रस्तुत शोध पत्र 'भारतीय संस्कृति के अवदान में बौद्ध धर्म की महत्ता' पर आधारित है। भारतीय संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में बौद्ध धर्म ने अपनी अमिट छाप छोड़ी। बौद्ध धर्म ने भारतीय में अहिंसा, सहिष्णुता, परोपकार, दया व मानव कल्याण की भावनाओं को विकसित किया तथा उन्हें जाति-प्रथा का विरोध करना सिखाया। इतना ही नहीं बल्कि छठी शताब्दी में जनमानस ब्राह्मण धर्म के थोथे आदर्शों से असंतुष्ट होकर ऐसे धर्म की तलाश में था, जहाँ उसे धार्मिक संतुष्टि मिल सके। महात्मा बुद्ध ने जनमानस की भावनाओं को देखते हुए बौद्ध धर्म को प्रतिष्ठित किया जहाँ सभी लोगों के लिए समागम के मार्ग खुले हैं। आज वर्त्तमान में भी बुद्ध के सिद्धांत, विश्व बंधुत्व और मानवतावादी विचारधारा की महत्ता कायम है।

शब्द कुंजी : भारतीय संस्कृति, बौद्ध धर्म, जातक-साहित्य, भिक्षु, आडंबर।

भूमिका :

प्रस्तुत शोध-पत्र ''भारतीय संस्कृति के अवदान में बौद्ध धर्म की महत्ता: एक ऐतिहासिक अध्ययन'' को केन्द्र में रखकर विस्तृत वर्णन किया गया है। बौद्ध-संघ व बिहार शिक्षा के केन्द्र थे। यहाँ तक कि बौद्ध अध्ययन और उस समय के समकालीन साहित्य को जानने-समझने के लिए प्राचीन विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। उस समय के जातक-साहित्य पाली भाषा में लिखा गया है; जिसमें बौद्ध के बारे में वर्णन है। जातक-साहित्य से तत्कालीन भारत की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक स्थिति को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। इसके अतिरिक्त संस्कृत भाषा में भी अनेक बौद्ध ग्रंथों की रचना की गई है जो भारतीय साहित्य और संस्कृति की अमूल्य निधि है। इन ग्रंथों में द्विव्यावदान, बुद्धचरित, सौन्दरनन्द, सारिपुत्र प्रकरण, सद्धर्म-पुण्डरीक, मंजूश्री मुलकल, ललित विस्तर, अमरकोष, मिलिन्दपन्हों, महावस्तु व लंकावतार-सूत्र प्रमुख हैं, जिनका न केवल साहित्यिक बल्कि ऐतिहासिक महत्त्व भी है।[1]

बौद्ध धर्म ने बौद्धिक विचारों की स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया। मगवान बुद्ध का विचार था कि 'आन्तदीपों' बनकर ही कार्य करना चाहिए। इस प्रकार स्वतंत्र विचारवादी बौद्ध दार्शनिकों ने दर्शन-साहित्य का सृजन किया। जिससे दर्शन तथा तर्क-शास्त्र की उन्नति हुई। रतिभानु सिंह नाहर ने बौद्ध धर्म से प्रभावित दर्शन के विषय में लिखा है, ''बौद्धों का दार्शनिक साहित्य केवल प्रचुर और समृद्ध ही नहीं, अपितु विचारोत्तेजक भी था। असंग, वसुमित्र, दिङ्नाग और ध र्मकीर्ति और बौद्ध दार्शनिकों की कृतियों का अध्ययन किए बिना कोई भी व्यक्ति भारतीय दर्शन का आचार्य नहीं कहा जा सकता। बौद्धों के दार्शनिक विचारों का खण्डन करने के लिए अन्य अनेक दार्शनिक उत्पन्न हुए, जिनमें भगवान शंकराचार्य का नाम अग्रगण्य है।'' परन्तु शंकराचार्य पर बौद्धों की विचार सारणी का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।[2]

बौद्ध धर्म का सर्वाधिक प्रभाव भारतीय कला पर दृष्टिगोचर होता है। बौद्ध-कला के अन्तर्गत बनी

सहायक शिक्षिका,पालि भाषा एवं साहित्य,+2 विद्यालय, लखावर,जहानाबाद

कलाकृतियों सौन्दर्य व निपुणता में अद्‌भुत हैं। भारतीय कला की परम्परा यद्यपि अत्यंत प्राचीन है किंतु सिन्धुघाटी की कला के अतिरिक्त भारत में उपलब्ध कलाकृतियाँ अधिकांशतया बौद्ध कला के नमूने हैं। मूर्त्ति-कला व शिल्प कला का उद्‌भव ही बौद्ध धर्म के द्वारा हुआ। बौद्ध धर्म की एक अन्य प्रमुख देन गुहा मन्दिर का स्तूप है। साँची, भरहुत, अमरावती के स्तूप तथा सम्राट अशोक के शिला स्तम्भों तथा काली की बौद्ध गुफाएँ बौद्ध धर्म की ही देन है। गया का बौद्ध मन्दिर बौद्ध-कला की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति है। अजन्ता, ऐलोरा, बरावर व बाघ की गुफाओं में बौद्धकालीन स्थापत्य कला व चित्रकला की अनुपम कृतियाँ हैं। इसी आधार पर कोहेन ने लिखा है, सभी क्षेत्रों में चित्रकला, स्थापत्य, वास्तुकला और कारीगरी में बौद्ध धर्म ने ऐसी कलाकृतियों का निर्माण किया है जो पाश्चात्य कला की श्रेष्ठतम कृतियों में गणना की जाती है।'' गान्धार-कला तथा मथुरा-काल पर भी बौद्ध धर्म का स्पष्ट प्रभाव दिखता है।[3]

संघ-व्यवस्था स्थापित करने का श्रेय भी बौद्ध धर्म को ही जाता है। बौद्धों ने अपने भिक्षुओं को संगठित जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया था। भारत में इससे पूर्व संघ-व्यवस्था विद्यमान नहीं थी। सर्वप्रथम महात्मा बुद्ध ने भिक्षुओं के लिए एक संगठन बनाया जिसे बौद्ध-संघ कहा गया। प्रो. सरकार ने लिखा है कि बौद्ध धर्म के विकास के पूर्व भी यद्यपि भारतवासी वृद्धावस्था में एकांत में रहकर अपना समय चिन्तन में व्यतीत करते थे, किन्तु बौद्ध भिक्षुओं का एक सूत्र में बँधकर रहना तथा एक के ही नेतृत्व में नियमों का दृढ़ता से पालन करना बौद्ध धर्म की विशेषता है।[4]

बौद्ध धर्म की एक महान् देन भारतीय संस्कृति का अन्य देशों में प्रचार एवं प्रसार था। बौद्ध, भिक्षु भारतीय धर्म एवं संस्कृति के प्रचार हेतु चीन, जापान, लंका, तिब्बत, वर्मा, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया आदि देशों में गये। परिणामस्वरूप, विदेशों से भी विद्वान अपनी ज्ञान-पिपासा शान्त करने के लिए भारत आने लगे। इस प्रकार भारत के अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक संबंध स्थापित हुए तथा धीरे-धीरे इन देशों पर भारतीय संस्कृति का व्यापक प्रभाव हुआ। इसी कारण श्री वेदालंकार ने लिखा है, 'वृहत्तर भारत के निर्माण में उन्होंने (बौद्धों) सबसे अधिक सहायता दी।[5]

बौद्ध धम्म और संस्कृति

धर्म और संस्कृति में बड़ा ही घनिष्ठ होता है। धर्म से संस्कृति पृष्ठ होती है और संस्कृति से धर्म को संरक्षण प्राप्त होता है। धर्म के बिना संस्कृति की ओर संस्कृति के बिना धर्म के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती। धारण करने योग्य समस्त जीवनपयोगी और कल्याणकारक सात्त्विक गुण और आचार धर्म है तथा उनकी परम्परागत धरोहर संस्कृति है। किसी भूखण्ड विशेष के जाति-विशेष, धर्म-विशेष या सम्प्रदाय विशेष की विशिष्ट रागात्मक संवेदनीयता और परम्परागत रीति नीति या आचार व्यवहार को संस्कृति कहते हैं। इसी आधार पर विभिन्न जातिगत संस्कृति को विभिन्न संज्ञाओं से अभिहित किया जाता है, जैसे भारतीय संस्कृति, यूरोपीय संस्कृति, हिन्दू संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति, जैन संस्कृति, बौद्ध-संस्कृति आदि-आदि'।

संस्कृति के तीन कार्य हैं- पहला यह कि संस्कृति शिक्षा और अनुशासन के द्वारा मनुष्य के नैतिक, बौद्धिक, और सौंदर्य बोध सम्बन्धी विकास को संपन्न करती है। दूसरा यह कि वह ललित-कलाओं, मानवीय शास्त्रों और विज्ञान के उदार पक्षों में अभिरूचि उत्पन्न करती है और उनके विकास में योगदान देती है। तीसरा, संस्कृति का कार्य यह है कि इन सबके परिणाम-स्वरूप वह मानवीय स्वभाव का संस्कार करती है और उसे प्रकाश प्रदान करती है। इन तीनों अर्थों में बौद्ध धर्म का संस्कृति से घनिष्ठ संबंध है। हम पहले ही देख चुके हैं कि बौद्ध धर्म निर्वाण का एक साधन है, जिसमें शील, समाधि और प्रज्ञा सम्मिलित हैं। संस्कृति को हम इनमें से साधना-प्रक्रिया में समाविष्ट कर सकते हैं,

क्योंकि साधना-प्रक्रिया में समाधि-भावना के समान कला और विज्ञान भी मनुष्य की चेतना को शुद्ध कर उसे संस्कृत बनाने और एक उच्चतर स्तर पर ले जाते वाले हैं। इस प्रकार संस्कृति व निर्वाण का एक साधन बन जाती है। चूंकि विज्ञान की अपेक्षा ललित-कलाओं में मुनष्य के हृदय को स्पर्श करने और उसे प्रभावित की सामर्थ्य के कारण मनुष्य की चेतना को अधिक उच्च धरातल पर ले जा सकती है और उसका अधिक संस्कार और विशुद्धीकरण कर सकती हैं, इसीलिए गणित या रसायन-शास्त्र की अपेक्षा चित्र-कला, संगीत और कविता के साथ बौद्ध धर्म का अधिक घनिष्ठ संबंध रहा है।

कला के दो रूप है, धार्मिक और लौकिक। धार्मिक कला में अभिज्ञानपूर्वक मनुष्य की चेतना को उच्चतर धरातल पर ले जाने का का प्रयत्न किया जाता है। उदाहरणत: बुद्ध की मूर्ति को लीजिए। एक कलाकृति के रूप में इसकी केवल सौन्दर्य-बोध संबंधी शक्ति के कारण मनुष्य का मन एक उच्चतर अवस्था में चला जाता है। जिस मूर्ति में यह कलात्मक सौन्दर्य न हो उससे यह काम नहीं हो सकता। जब साधक बुद्धि-मूर्ति की ओर अपने चित्त को स्थिर करता है तो स्वभावत: उसे अपनी चेतना को निर्मल और परिशुद्ध करने में सहायता मिलती है। बौद्ध कला में चित्र-कला, मूर्ति-कला, संगीत और कविता को एक आध्यात्मिक परम्परा में अंतर्निबद्ध कर दिया गया है और उनका उपयोग न केवल धर्म-प्रचार के साधन के रूप में, बल्कि ध्यान के आलंबन के रूप में किया गया है। यही कारण है कि बौद्ध कला मनुष्य की चेतना को ऊपर उठाने वाली वह सबसे बड़ी चेष्टा है जिसकी सद्भावना मनुष्य ने की है। लौकिक कला का संबंध चूँकि धर्म से नहीं होता, इसलिए उसका प्रभाव चेतना को ऊँचा उठाने में इतना अधिक समर्थ नहीं होता। चूँकि दृढ़ बुनियाद नैतिक जीवन में नहीं होती, इसलिए उसका प्रभाव भी क्षणस्थायी होता है। कला ध्यान में अभ्यास में सहायक हो सकती है, परंतु वह उसके स्थान को नहीं ले सकती। इसी प्रकार कला धर्म के स्थान को भी नहीं ले सकती। निर्वाण के साधन के रूप में धर्म के, जैसे हम पहले देख चुके हैं, तीन अंग है- शील समाधि और प्रज्ञा। कला ध्यान को प्रेरणा दे सकती है, परंतु वह प्रज्ञा को उत्पन्न नहीं कर सकती। समाधि और प्रज्ञा में यही अंतर है कि समाधि चाहे जितनी ऊँची चली जाए, परन्तु इसीलिए वह लौकिक रहती है, जबकि प्रज्ञा लोकोत्तर है। इसलिए धर्म, जिसमें केवल नीति (शील) और ध्यान (समाधि) ही नहीं, बल्कि प्रज्ञा भी सम्मिलित है, कला को अपने अंदर समाए हुए ही नहीं, बल्कि ध र्मिक कला, लौकिक और अपने में अन्तर्भूत किये हुए है। इसका अर्थ यह है कि कला का ध्यान के लिए उपयोग करने के अलावा उसके सुंदर वस्तुओं की शुद्धताकारी और संस्कारमयी शक्ति को भी स्वीकृति मिली है और स्वंतत्र रूप से कलाओं के विकास को प्रोत्साहन मिला है। यही कारण है कि हमें बौद्ध कला की परंपरा में केवल बुद्ध और बोधिसत्वों की ही मूर्तियां नहीं मिलती, बल्कि यक्ष, यक्षिणी और अप्सराओं की भी, जिनका बौद्ध धर्म के सिद्धांतों से कोई संबंध नहीं है। एक ओर अश्वघोष ने यदि बुद्ध के चरित पर एक महाकाव्य लिखा है, तो दूसरी ओर वैंग-वी ने पर्वतों, कुहासों और निर्झरिणियों के गीत गाए हैं। महायान ने बोधि-प्राप्ति के पूरक साधनों के रूप में, धर्म के साथ अधिक से अधिक कलाओं और विज्ञानों का एकीकरण भी किया है। वस्तुत: हीनयान और महायान दोनों ने ही प्रचुर मात्रा में लौकिक और धार्मिक कला की सृष्टि की है। बौद्ध धर्म ने भारत में राजनैतिक एवं सामाजिक एकता को स्थापित करने का प्रयास किया। जनभाषा व जनसाहित्य ने राष्ट्रीयता की भावनाओं को प्रबल किया तथा जनसाधारण को अन्धविश्वासों व रूढ़िवादिता से मुक्त किया। हैवल ने लिखा है, आर्यावर्त में जाति-कथा के बंधनों को तोड़कर पुरोहितों की जटिल रीतियों तथा अंधविश्वासों को दूर करके बौद्ध ध र्म ने भारत के आध्यात्मिक वातावरण को पवित्र किया। इस प्रकार बौद्ध धर्म ने सम्पूर्ण भारत को एकता प्रदान करने का प्रयास किया तथा मौर्य-वंश के काल में भारतीय एकता के लिए मार्ग प्रशस्त किया। बौद्ध धर्म ने

एक ओर जहाँ भारत की राजनीतिक एकता के प्रयास किये, दूसरी ओर राजाओं को अहिंसा की शिक्षा दी, जिससे उन्हें युद्धों में रूचि न रही। इसी प्रकार यद्यपि बौद्ध धर्म ने सदाचार व नैतिकता का पालन, तथा माता-पिता, गुरु, साधु-संन्यासी आदि का आदर,व जाति-प्रथा का विरोध करना सिखाया तथापि सामाजिक दृष्टि से इसके कुछ दुष्परिणाम भी हुए। अनेक स्त्री-पुरुष घर-गृहस्थी त्यागकर भिक्षु बन गये तथा बौद्ध धर्म की दु:ख प्रधान शिक्षाओं के कारण लोग निराशावादी होने लगे।[6] बौद्ध धर्म की लोकप्रियता ने ब्राह्मण धर्म के अनुयायियों को आत्म-निरीक्षण के लिए प्रेरित किया, क्योंकि बौद्ध धर्म का आविर्भाव ही ब्राह्मण धर्म के विरूद्ध प्रतिक्रिया के कारण हुआ था। ब्राह्मण धर्म से पशु-बलि विलुप्त होने लगी तथा जटिल कर्मकाण्ड का स्थान कम हो गया। बौद्ध धर्म के प्रभाव से ही मूर्त्ति पूजा का विकास भी संभव हुआ। धार्मिक क्षेत्र में बौद्ध धर्म की सर्वाधिक देन यह थी कि ऐसे समाज में जबकि जनसाधारण ब्राह्मण ध र्म की कुरीतियों, हिंसात्मक यज्ञों व जटिल कर्मकाण्डों से उकता चुका था, बौद्ध धर्म का एक ऐसे धर्म के रूप में आविर्भाव हुआ जिसमें उपरोक्त दोष न थे।[7]

निष्कर्ष:

इस प्रकार शोध-पत्र के अध्ययन से स्पष्ट है कि बौद्ध धर्म का भारतीय संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में योगदान रहा है। जिस समय जनसाधारण को ब्राह्मण धर्म के स्थान पर एक नवीन धर्म जो आडम्बर रहित, सरल व जनहितकारी हो, की आवश्यकता थी, उस समय उनकी इन सभी आकांक्षाओं को बौद्ध धर्म ने पूर्ण किया। भारत में राजनीतिक व सामाजिक एकता स्थापित करने के अतिरिक्त बौद्ध धर्म ने भारतीय धर्म एवं संस्कृति को सुदूर देशों तक पहुँचाया तथा सांस्कृतिक दृष्टि से उन्हें भारत के आधीन किया। बौद्ध धर्म के परिणामस्वरूप भारतीय साहित्य व दर्शन के कोष में अभिभूत वृद्धि हुई। बौद्ध धर्म से प्रभावित ऐसी कलाकृतियों की रचना की गई जो विश्व की श्रेष्ठतम कृतियों से किसी भी दृष्टि से कम न थीं। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म की एक प्रमुख महत्ता जनता में लोकतंत्र की भावना को जाग्रत करना था जिसके दूरगामी परिणाम उभर कर आये।

बौद्ध धर्म के दुष्परिणामों का उल्लेख करना भी नितान्त आवश्यक है। बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने युद्धों में विजय प्राप्त करने के स्थान पर धर्म-विजय का सहारा लेना प्रारम्भ कर दिया जिससे उनका सैन्य-संगठन शक्तिशाली न रहा। अत: वैदेशिक आक्रमणों के समय भारत को अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता बनाये रखना कठिन हो गया। इसके अतिरिक्त स्त्री-पुरुष अपने सामाजिक उत्तरदायित्व कोभूलकर भिक्षु-भिक्षुणियाँ बनने लगे जिससे सामाजिक ढाँचा दुर्बल होने लगा तथा समाज में उत्तरदायित्वहीनता व अकर्मण्यता की भावनाएँ प्रबल होने लगीं। अत: समाज की प्रगति शिथिल हो गई। उपर्युक्त दोषों के पश्चात भी बौद्ध धर्म के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. वियोगी,पं. मोहनलाल महतो: 'जातक कालीन भारतीय संस्कृति, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्,पटना,1998
2. छान्दोग्योपनिषद्,अ.-6,खण्ड-1
3. पाणिनी: अष्टाध्यायी,5.2.84
4. ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया,1919की भूमिका
5. झा एवं श्री माली: 'प्राचीन भारत का इतिहास', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली,2011
6. डॉ. एस. के. मित्तल : ''भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास'', भागलपुर, 2008
7. डॉ. एच.सी. राय चौधारी:'प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास',किताब महल,इलाहाबाद, 1971